Dr .Punam Thakur ,
Department of
B.Ed.Jsr,
Sub.Padagogy of
School Subject
History(S.St.)
Semster-II ,Paper-
VIIA.
Topice-Concept
and Scope of
History Subject

Scanned with CamScanner

इतिहास की आधुनिक धारणा
(MODERN CONCEPT OF HISTORY)

19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था, तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं, वरन् राजनीतिशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इस 'विज्ञानों के विज्ञान' (Science of Sciences) का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के विषय में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास को 'कारण' (Cause) तथा 'कार्य-कारण भाव' (Causality) का सूचक माना। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है जिनका अनुसरण भौतिक तथा सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन-क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन-क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

Scanned with CamScanner

आज इतिहासकार इतिहास का निर्माण करने के लिए सर्वप्रथम तथ्यों (Facts) का संग्रह करता है। इसके उपरान्त वह उन तथ्यों का सत्यापन (Verification) करता है। तथ्यों का सत्यापन उसके समक्ष एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर देता है। समस्या यह है कि अतीत के अवशेष उसके परिवर्तित तथा विकृत रूप में आते हैं। परन्तु आधुनिक युग ने ऐसे साधन उपलब्ध करा दिये हैं कि इनके परिवर्तित एवं विकृत रूप के होते हुए भी इतिहासकार वास्तविकता को खोजने में सफल हो जाता है। परन्तु जब वह अतीत के लिखित अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि द्वारा इतिहास का निर्माण करता है तब उसे तथ्यों के सत्यापन में कठिनाई की अनुभूति करनी पड़ती है। उन अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि की विषय-वस्तु अविश्वसनीय हो सकती है। उस समय इतिहासकार को दूसरी लिखित सामग्री तथा अन्य प्रमाणों का प्रयोग करना पड़ता है। तभी वह वास्तविकता को प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकता है। परन्तु ऐसा करना सभी क्षेत्रों में सम्भव नहीं है क्योंकि उनसे सम्बन्धित दूसरी अन्य सामग्री एवं प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं।

जब इतिहासकार तथ्यों की विश्वसनीयता का निर्धारण कर लेता है तब उसके बाद वह तथ्यों को उनके महत्त्व के अनुसार वर्गीकृत करता है। इसके उपरान्त वह वर्गीकरण की शुद्धता का सत्यापन करता है। ऐसा करने में वह कल्पना तथा पूर्वधारणाओं का प्रयोग करता है। इनका प्रयोग करना उसके लिए अनिवार्य है। यहाँ इतिहासकार का काल्पनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि वह तथ्यों का आविष्कार करे। परन्तु उसकी कल्पना उसके स्रोतों द्वारा प्रदान की जाने वाली सूचनाओं से बँधी रहती है। अतः वह घटनाओं का आविष्कार नहीं कर सकता। कल्पना तथा पूर्वधारणाओं के प्रयोग के कारण ही गेटे (Goethe) ने कहा था कि इतिहास की समय-समय पर पुनःरचना की जानी चाहिए; क्योंकि प्रत्येक सन्तति नवीन रुचियों तथा वस्तुओं को नवीन ढंग से देखने तथा उनके प्रति नवीन दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ती है। ये नवीन दृष्टिकोण एवं रुचियाँ ही पूर्वधारणाएँ कहलाती हैं। अतः इन पूर्वधारणाओं से प्रभावित इतिहास को वास्तविकता पर पहुँचाने के लिए समय-समय पर उसकी पुनःरचना करना आनिवार्य है। अन्त में इतिहासकार वर्गीकृत (Classified) तथ्यों का विश्लेषण करके एक सामान्य सिद्धान्त का निर्धारण करता है।

अतः उक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक धारणा के अनुसार इतिहास समाज का एक सच्चा विज्ञान है जो मानव समाज की विवेचना वैज्ञानिक विधि से करता है।

Scanned with CamScanner

इतिहास का क्षेत्र
(SCOPE OF HISTORY)

शाटवैल के अनुसार इतिहास के दो अर्थ लिये जा सकते हैं—या तो इसका आशय हो सकता है—घटनाओं का लेखा या स्वयं घटनाएँ। वस्तुतः घटनाएँ इतिहास नहीं है वरन् उनका लेखा-जोखा इतिहास है। अतीत के गर्भ में अनन्त घटनाएँ समाहित हो चुकी हैं, प्रत्येक घटना इतिहास नहीं है। यदि उनको वैज्ञानिक रूप से क्रमबद्ध करके संयोजित किया जाये तो वे इतिहास की सामग्री अवश्य हैं। प्रायः यह

Scanned with CamScanner

कहा जाता है कि पृथ्वी पर जो भी घटित हुआ, वह इतिहास है। ऐसा कहने और स्वीकार करने का आशय यह होगा कि हम इतिहास के कलेवर को बढ़ाते चले जायें। इस दृष्टि से पृथ्वी की कहानी भी इतिहास का अंग बन जायेगी। परन्तु इतिहास के क्षेत्र में केवल मानव के विकास की कहानी को ही शामिल करना चाहिये।

इतिहास के क्षेत्र में उन जीवन गाथाओं को सम्मिलित किया जाता है जो व्यक्ति को सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करती हैं। यदि हम महान व्यक्तियों को सामाजिक संदर्भ में देखते हैं और उनके कार्यों का सामाजिक आधार पर अध्ययन करते है तो वे इतिहास की घटनाओं में शामिल किये जाते हैं अन्यथा नहीं। इस प्रकार तथ्यों को सामाजिक संदर्भ में एवं युग विशेष के संदर्भ में देखना इतिहास की सामग्री का अंग होगा। वे व्यक्ति एवं घटनाएँ जो एक युग विशेष के सामाजिक संदर्भ में देखी जाती हैं और जिनका सामाजिक प्रक्रिया से सम्बन्ध है, वे इतिहास की सामग्री हैं, इस प्रकार इतिहास का क्षेत्र व्यक्ति है, किन्तु एक युग विशेष के संदर्भ में।

इतिहास घटनाओं की शृंखला है और ये घटनाएँ काल के दीर्घ प्रवाह में किसी एक निश्चित बिन्दु या समय पर घटित होती हैं। इस प्रकार काल इतिहास में क्रम-बद्धता प्रस्तुत करता है। यदि काल एक क्षण के लिए स्थिर हो जाय तो इतिहास भी समाप्त हो जायेगा। अतः काल 'वर्तमान' इतिहास का प्रमुख तत्त्व है और परिवर्तन में क्रमबद्धता भी प्रस्तुत करता है। इतिहास मानव के क्रमबद्ध विकास की कहानी है जिसमें काल के विभिन्न सोपान उसके विकास की विभिन्न स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं।

भारत में इतिहास का विकास विभिन्न प्रकार की मौखिक सामग्री से हुआ है। इस मौखिक सामग्री में मौखिक परम्पराएँ, गाथा, आख्यान, पुराण, इतिवृत्त आदि आते हैं। राजाओं, सम्राटों एवं महापुरुषों का प्रशस्ति-गान सूत लोग करते थे और वे ही ऐतिहासिक परम्पराओं को भावी सन्तति को सौंपते चले जाते थे।

अन्त में इतिहास के क्षेत्र को सार रूप में निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत कर सकते हैं—

1. इतिहास अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा है।
2. इतिहास मानव के विकास की क्रमबद्ध कहानी है।
3. इतिहास का क्षेत्र जीवन गाथाओं से सम्बन्धित है।
4. इतिहास में मौखिक परम्पराएँ, गाथा आदि शामिल हैं।
5. इतिहास का क्षेत्र व्यक्ति है—युग विशेष के संदर्भ में।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इतिहास का क्षेत्र व्यापक तथा विशाल है। इतिहास का क्षेत्र जगत के समान व्यापक है। साथ ही जब तक इस पृथ्वी पर मानव का अस्तित्त्व है तब तक इतिहास का क्षेत्र व्यापक एवं विशाल रहेगा। आज हम यह देखते है एवं सुनते हैं—कला का इतिहास (History of Art), संस्कृति का इतिहास (History of Culture), सभ्यता का इतिहास (History of Civilization), धर्म का इतिहास (History of Religion), दर्शन का इतिहास (History of Philosophy),

Scanned with CamScanner

शिक्षा का इतिहास (History of Education), साहित्य का इतिहास (History of Literature) आदि। इस प्रकार इतिहास का क्षेत्र सीमाहीन है। निम्न चार्ट से इतिहास का क्षेत्र और भी स्पष्ट हो जाएगा—

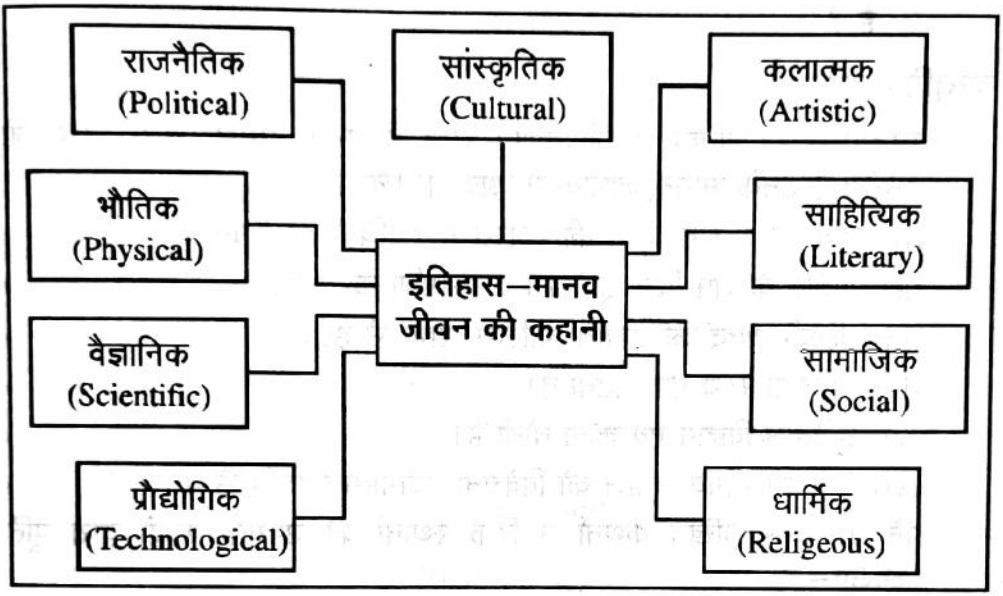

1. मध्यकालीन युग—इस युग में इतिहास धर्मशास्त्र (Theology) का गुलाम था।

2. 17वीं शताब्दी में—इस युग में आलोचनात्मक इतिहास का विकास हुआ। इस काल में असाहित्यिक स्रोतों—सिक्कों, शिलालेखों आदि का प्रयोग करके इतिहास का लेखन हुआ।

3. 19वीं शताब्दी में—इस काल में इतिहास को वैज्ञानिक विधियों एवं विश्लेषण पर आधारित किया गया।

4. 20वीं शताब्दी में—इस काल में इतिहास राजनैतिक तथ्यों से हटकर आर्थिक तथा सामाजिक तथ्यों के संदर्भ में लिखा जाने लगा था।

अन्त में, हम डा. आई. ई. स्वेन (Dr. I. E. Swain) के शब्दों में कह सकते हैं—

"History has become more than war and politics. To make the story complete, the historian of the new school makes use of the work of the history of the ethnologist, biologist, the chemist, the sociologist, and the economist. He is concerned with man's cultural advances and his society as well as with charters, constitutions and wars."

Scanned with CamScanner